



मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं  
(ग्रामीण कृषि मौसम सेवा)



केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर- 342003

दिनांक: 30 जून 2015

जोधपुर

जिले के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग, क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केन्द्र,  
जयपुर से प्राप्त मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

| मौसमी तत्व / दिनांक               | 30/06/15          | 01/07/15          | 02/07/15          | 03/07/15          | 04/07/15          |
|-----------------------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|
| वर्षा (मि.मी.)                    | 0                 | 1                 | 1                 | 1                 | 1                 |
| अधिकतम तापमान (°सेल्सियस)         | 40                | 40                | 41                | 41                | 41                |
| न्यूनतम तापमान (°सेल्सियस)        | 30                | 30                | 31                | 30                | 30                |
| बादलों की स्थिति (ओक्टा)          | 5                 | 4                 | 5                 | 4                 | 3                 |
| सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत) सुबह | 63                | 65                | 67                | 68                | 70                |
| सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत) शाम  | 28                | 30                | 28                | 26                | 24                |
| हवा की गति (कि.मी/घंटा)           | 20                | 20                | 20                | 18                | 16                |
| हवा की दिशा                       | दक्षिण-<br>पश्चिम | दक्षिण-<br>पश्चिम | दक्षिण-<br>पश्चिम | दक्षिण-<br>पश्चिम | दक्षिण-<br>पश्चिम |

मौसम पूर्वानुमान के आधार पर कृषि परामर्श सेवा, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा इस जिले के किसानों को सलाह:

खरीफ फसलो में दीमक के नियंत्रण के लिए बुवाई से पूर्व अन्तिम जुताई के समय 20 से 25 किलो क्यूनालफोस 1.5 प्रतिशत चूर्ण खेत में डालें।

बाजरा की फसल को अरगट या चेपा रोग से बचाने के लिए बीज को 20 प्रतिशत नमक के घोल में डुबो कर हिलाएं तथा साफ पानी में धोने के बाद सुखा कर बुवाई करें।

कपास को फसल में निराई गुडाई कर नमी संरक्षण कर व खरपतवार निकालें।

पशुपालक पशुओं में गलघोंटू व लंगड़ा बुखार रोग के टीके लगवाएं।

(नौडल ऑफीसर)